हर हर शंकर ॐ जय जय शंकर

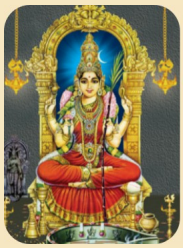

श्री-वेदव्यासाय नमः

श्रीमद्-आद्य-शंकर-भगवत्पाद्-परंपरागत-मूलाम्नाय-सर्वज्ञ-पीठम्
श्री-कांची-कामकोटि-पीठम्
जगद्गुरु-श्री-शंकराचार्य-स्वामि-श्रीमठ-संस्थानम्

सूर्य-अर्घ्य-प्रदानम्

महिलाओं का सूर्य को अर्घ्य प्रदान करने की विधि

स्नान कर, शुद्ध वस्त्र तिलक आदि धारण कर, तीर्थपात्र में शुद्ध जल लेकर पूरी भक्तिपूर्वक **हर दिन तीन बार** अर्घ्य प्रदान करना चाहिए।

सुबह **पूर्व दिशा** की ओर देखकर और शाम को **पश्चिम दिशा** की ओर देखकर करना चाहिए। दोपहर का अर्घ्य दिनमध्य तक पूर्व दिशा में देखकर और उसके बाद पश्चिम दिशा में देखकर अर्घ्य प्रदान करें।

पहला श्लोक से प्रार्थना कर, दूसरे श्लोक को तीन बार जापकर हर बार अर्घ्य प्रदान करें।

दोनों हाथों से पानी इकट्ठा करना और हथेली की ऊपर की ओर से, भक्ति के साथ पानी को छोड़ने को ही **अर्घ्य** कहते हैं।

क्या करें और क्या न करें

नदी जैसे तीर्थों में या किसी शुद्ध स्थल में अर्घ्य प्रदान करें। अगर ऐसा नहीं कर पायें तो थाली में अर्घ्य प्रदान कर बाद में शुद्ध स्थल में उस जल का विसर्जन कर सकते हैं।

वेद-धर्म-शास्त्र-परिपालन-सभा
9884655618 8072613857 vdspsabha@gmail.com vdspsabha.org

अर्घ्य प्रदान किए हुए जल को गंदे पानी के साथ मिलना नहीं चाहिए और पैर में भी पड़ना नहीं चाहिए। अगर पैर पड़नेवाले जगह पर गिर जाए तो उसे कपड़े से पोछ लें।

यही नहीं किसी भी अनुष्ठान के लिए उपयोग की जानेवाले पात्र, ताम्बे या पीतल जैसे धातु की ही होनी चाहिए। एवरसिल्वर जैसे पात्र उपयोग न करें।

किसी तरह की अशुद्धि के समय सिर्फ मानसिक प्रार्थना करें और शुद्धि होने के बाद ही अर्घ्य प्रदान करें।

श्लोक का अर्थ

प्रार्थना: हे सूर्य आइए! आप हज़ार किरणों वाली प्रतिभाशाली हो। आप इस जग के अधिपति हो हे दिवाकर (जो दिन का कर्ता है)! मेरी भक्ति पर दया करो और मेरे अर्घ्य को स्वीकार करो।

अर्घ्य: अनेक किरणों वाले परमात्मा! आपका प्रकाश सारी जगह फैली है। आप ही इस दुनिया की सृष्टि करता, सबसे पवित्र, सारी व्यवहारों की साक्षी, सबको अपनी-अपनी कर्मफल देनेवाले हो। आपको मेरी प्रणाम।

॥ प्रार्थना ॥

एहि सूर्य सहस्त्रांशो तेजोराशे जगत्पते।
अनुकंपय मां भक्त्या गृहाणार्घ्यं दिवाकर॥

॥ अर्घ्य-प्रदानम् ॥

नमो विवस्वते ब्रह्मन् भास्वते विष्णुतेजसे।
जगत्सवित्रे शुचये सवित्रे फलदायिने॥
(एवं त्रिः)